७. हिम

– नरेश मेहता

हिम, केवल हिम
केवल चलना
इस कठोर, ठंडी तापस प्रशांतता पर
केवल चलना ऊर्ध्व
ऊर्ध्वतम ही है चलना
जैसे पृथिवी चलकर गौरीशंकर बनती !
छूट गए पीछे
कस्तूरी मृगवाले वे
मधु मानव-से उत्सव जंगल,
ग्रीष्म तपे
तँबियारे झरे पात की
वे वनानियाँ,
गिरे चीड़फूलों से लदी भूमि
औ' औषधियों के वल्कल पहने
परम हितैषी वृक्ष
सभी कुछ छूट गए ।
नाना वर्ण-गंध के फूलों वाली
उपत्यकाएँ
देव-अप्सराओं के परिधान सरीखी ।
रंग-बिरंगे डैनों वाले
वे पाखीदल
और साँझ का देवदार वन वाला उनका
वह आकुल आरण्यक कूजन,
जैसे आश्रम कन्याओं की गोपन बातें ।
कैसे अंधकार उतरा करता था ।
वन प्रांतर में !
प्रत्येक पेड़ से
कुहरे जैसा आलिंगित हो
अंधकार तब भर उठता था ।
पर इस सबसे असंपृक्त रहता था ।
केवल शब्द, नदी का

परिचय

जन्म : १९२२, शाजापुर (म.प्र.)
मृत्यु : २०००
परिचय : 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध श्री नरेश मेहता उन रचनाकारों में से हैं जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं । आपकी भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है । आपके काव्य में रूपक, मानवीकरण, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है । आपको ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त हुआ है।
प्रमुख कृतियाँ : 'चैत्या', 'अरण्या', 'उत्सवा', 'वनपाखी सुनो'(काव्य संग्रह), 'उत्तर कथा'(दो भाग), 'डूबते मस्तूल', 'दो एकांत (उपन्यास)', 'महाप्रस्थान' (खंडकाव्य), 'कितना अकेला आकाश'(यात्रा संस्मरण) 'शबरी' आदि ।

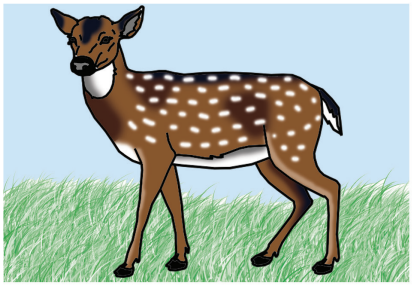

और हवा का
इस उन्मुक्त हवा में
चीड़ों के वन
झरनों से कलकल करते,
चीड़फूल-सा कैसा सूर्योदय होता था ।
प्रत्येक मोड़ पर
दक्षपुत्रियों-सी मिलने वाली वे उद्दाम
किंतु संकोची नदियाँ,
चट्टानों पर लहर फनों का
धुला-धुला-सा वह कोलाहल,
हर क्षण
घाटी या कि नदी में
गिर सकने वाली वे
पर्वत थामे चली जा रहीं
पगवाटें भी छूट गईं
सब छूट गईं
जैसे सांसारिकताएँ थीं ये भी ।

(खंडकाव्य 'महाप्रस्थान' के यात्रा पर्व से)

— o —

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश में नरेश मेहता जी ने उस समय का वर्णन किया है जब पांडव अपना राज्यभार राजा परीक्षित को सौंपकर 'स्वर्गारोहण' या 'महाप्रस्थान' के लिए निकल पड़े थे । पांडवों ने महाप्रस्थान हिमालय की ओर किया था । यहाँ कवि ने आरोहण के मार्ग का वर्णन किया है । रास्ते की कठिनाइयाँ, घाटी-चोटी, बर्फ, वन, प्राणी-नदी आदि का मनोरम वर्णन किया है । मेहता जी का मानना है कि हिमालय जड़ भी है और चेतन भी । उसकी नदियाँ, चोटियाँ, वन सब चेतना रूप हैं ।

शब्द संसार

तापस वि. पुं.(सं.) = तप करने वाला
पृथिवी स्त्री.सं.(सं.) = पृथ्वी, धरती
ताँबियारे वि.(हिं.) = ताँबे के रंग के
चीड़ पुं.सं.(हिं.) = एक सदाबहार वृक्ष
उपत्यका स्त्री.सं.(सं.) = घाटी, तराई, पताका
डैना पुं.सं.(हिं.) = बड़ा पंख
पाखीदल पुं. सं.(हिं.) = पंखों का समूह
आकुल वि.(सं.) = बेचैन, परेशान
प्रांतर पुं.सं.(सं.) = निर्जन पथ, क्षेत्र
असंपृक्त वि.(सं.) = जो किसी के साथ मिला या जुड़ा न हो, अलग

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

१. पृथिवी चलकर बनती = _____

२. धुला-धुला-सा = _____

३. पर्वतों को थामकर चली जाने वाली = _____

४. आश्रम की कन्याएँ करतीं = _____

(२) कविता में इस अर्थ के आए हुए शब्द :

शोर	निरंकुश	स्वतंत्र	हित चाहने वाले
_____	_____	_____	_____

(३) कविता में आए प्राकृतिक घटक :

_____	_____	_____	_____

(४) विशेषताएँ लिखिए :

वृक्ष _____, प्रशांतता _____, पाखीदल का समूह _____,

नदियाँ _____, हवा _____, झरने _____ ।

(५) कविता की अंतिम छह पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

(६) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम

२. रचना का प्रकार

३. पसंदीदा पंक्ति

४. पसंद होने का कारण

५. रचना से प्राप्त प्रेरणा

उपयोजित लेखन

अपने परिसर में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'रक्तदान शिविर' का आयोजन करना है, सहायक आयोजक के नाते विज्ञापन बनाइए ।